चिड़िया बनानेवाले स्वामीनाथन

प्रयाग शुक्ल

चित्रकार **स्वामीनाथन को** चिड़िया बनाना बहुत पसन्द था। उनके कई चित्रों में यह चिड़िया दूर आकाश में उड़ती हुई दिखाई पड़ जाती है। कई बार वह किसी चट्टान पर बैठी होती है। और वह चट्टान भी उड़ रही होती है। ऐसा लगता है जैसे चट्टान को चिड़िया ही अपने पंखों पर आकाश में उड़ा रही हो। आकाश पर कभी-कभी सूर्य या चन्द्रमा का भी आकार होता है। और पहाड़ भी दिखाई पड़ जाते हैं। कभी-कभी पेड़, फूल भी दिख जाते हैं। उनके चित्रों को देखकर कभी लगता है, जैसे धरती-आकाश मिल रहे हों – एक-दूसरे से।

जो. स्वामीनाथन का यह चित्र हेमन्त राव ने बनाया है।

यह देखकर अचरज होता है न कि चिड़िया चट्टान को लेकर कैसे उड़ सकती है! पर, सोचकर देखो तो यह बात बड़ी सहज लग सकती है। यह भी तो हो सकता है कि चिड़िया जिस चट्टान पर बैठी हुई है, और उड़ रही है, वह चट्टान न होकर चट्टान की याद हो। ठीक उसी तरह जैसे हम किसी जगह घूमने जाते हैं और किसी होटल में या मौसी, मामा, बुआ, चाचा, नाना-नानी, दादा-दादी के घर ठहरते हैं और लौटते हैं तो उस जगह की याद भी कुछ दूर तक साथ चली आती है। या यह भी हो सकता है कि चिड़िया ही किसी उड़ती हुई चट्टान पर बैठ गई हो। तुम कहोगे, भला चट्टान भी कभी उड़ती है? हाँ, उड़ती तो नहीं है, पर, इसकी कल्पना तो की ही जा सकती है। कल्पना करने का भी तो अपना मज़ा होता है। तो, हम एक चित्र में बनी हुई चीज़ों को कई तरह से देख सकते हैं।

स्वामीनाथन ने इस तरह के चित्र कई बरस तक बनाए थे। कुछ लोगों को उनका बार-बार चिड़िया, पहाड़, चट्टान बनाना अच्छा नहीं लगा। एक बार तो एक कला-आलोचक ने लिख भी दिया था कि अगर अगली बार मैंने स्वामीनाथन के किसी चित्र में चिड़िया देखी तो उस पर पत्थर फेंक दूँगा। वह सचमुच में ऐसा करते थोड़े ही। यह तो अपनी बात को कहने का एक ढंग था। खुद स्वामीनाथन को यह पढ़कर बहुत मज़ा आया था।

हमारे देश का आकाश खुला हुआ है। उसमें धूप भरी होती है। चटख रंगों वाली चीज़ें चटख रंगों में दिखती हैं। स्वामीनाथन के चित्रों के रंग भी धूप में चमकते हुए से हैं। लाल, पीले, हरे, नीले का इस्तेमाल उनके चित्रों में खूब है। धूप में चीज़ों की परछाईं भी दिखती है। उनके कुछ चित्रों में ऊपर उड़ती चिड़िया की परछाईं भी नीचे दिखती है। धरती और आकाश का विस्तार उनके चित्रों में बहुत अच्छा लगता है।

स्वामीनाथन का बचपन शिमला में बीता था। पहाड़ों से उन्हें प्रेम था। हिमाचल प्रदेश में कोटखाई नाम की जगह में उन्होंने एक घर खरीदा था, जिसके साथ सेबों के कई पेड़ थे। उसके सामने गिरिगंगा नाम की एक नदी बहती थी। एक बार उनके साथ कुछ दिनों के लिए मैं भी वहाँ गया था। सचमुच बड़ी सुन्दर जगह थी। ज़्यादा समय तो वे दिल्ली में रहते थे। कभी-कभी पहाड़ों की अपनी इस जगह में जाते थे।

1980 के आसपास स्वामीनाथन भोपाल आ गए थे। भोपाल के कला-केन्द्र भारत भवन में "रूपंकर" नाम से दो संग्रहालय हैं। एक में, आधुनिक (या शहरी) कलाकारों का काम है, दूसरे में, लोक और आदिवासी कलाकारों का। स्वामीनाथन इसी "रूपंकर" संग्रहालय के लिए भोपाल आए थे। वे इसके पहले निदेशक थे। लोक और आदिवासी कलाकारों का काम इकट्ठा करने के लिए वे मध्यप्रदेश भर में काफी घूमे थे। बस्तर तक गए। पन्द्रह दिनों तक मैं भी उनके साथ रहा था। आदिवासी लोगों से वे एकदम घुल-मिल जाते थे। आदिवासी इलाकों में घूमने से, उनके साथ घुलने-मिलने से उनके काम में भी बदलाव आया। उनके रंग भी बदल गए। उनके चित्रों में चिड़िया, पेड़, पहाड़, आकाश न होकर धरती के मटमैले से रंग आ गए। इस दौरान बनाए उनके कुछ चित्र तो माटी की किन्हीं दीवारों जैसे हैं जिनमें रंगों की परतें भर-सी रही हैं। इन "दीवारों" पर लिखे-अधलिखे से कुछ अक्षर हैं, बने-अधबने कुछ हैं। जैसे, खड़िया रंगों से दीवार पर या ब्लैकबोर्ड पर कोई कुछ लिखकर बना और पोंछ देता है। स्वामीनाथन के ये चित्र बताते हैं कि किसी चित्र में जो कुछ बना होता है, उसका कोई मतलब निकालने से ज़्यादा अच्छा यह होता है कि हम उसके रंगों, रेखाओं को ध्यान से देखें। और किसी चित्र के कुल रूप को सराहें। एक कलाकार का बनाया हुआ चित्र गणित के किसी सवाल की तरह या किसी पहेली की तरह नहीं होता, जिसका कोई एक हल हमें ढूँढ निकालना है। वह तो रंगों और आकारों के सौन्दर्य में हमें ले जाता है और तरह-तरह की कल्पनाओं की ओर भी, जो कभी खत्म नहीं होतीं। इसीलिए तो हम किसी चित्र को बार-बार देखते हैं और हर बार उसमें कोई नई चीज़ दिख जाती है, जिसकी ओर पहले ध्यान नहीं गया था।

स्वामीनाथन की मातृभाषा तमिल थी। पर, वे बहुत अच्छी

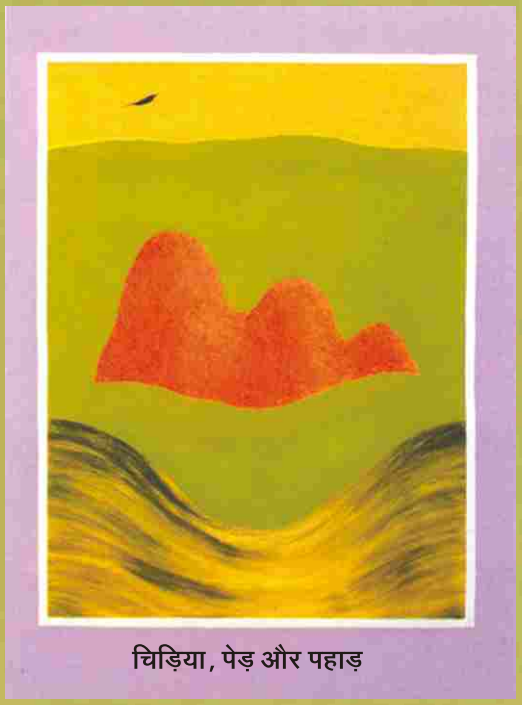

चिड़िया, पेड़ और पहाड़

हिन्दी लिखते और बोलते थे। हिन्दी में उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं। चित्र बनाने के साथ-साथ वे कला पर लेख भी लिखते थे, अँग्रेज़ी में। एक ज़माने में "काँट्रा" (*Contra*) नाम से उन्होंने अँग्रेज़ी में कला पत्रिका भी निकाली थी। 1960 के आसपास उन्होंने कुछ साथी कलाकारों के साथ मिलकर "ग्रुप 1890" नाम की मण्डली भी बनाई थी। इस ग्रुप के नाम की भी एक कहानी है। स्वामीनाथन और उनके मित्र, भावनगर (गुजरात) में एक कलाकार के घर पर इकट्ठा हुए थे। यहाँ ग्रुप का नाम और काम सोचा जाना था। जब कोई नाम नहीं सूझा तो किसी ने सुझाया कि घर का जो नम्बर है, 1890, क्यों न उसी संख्या के नाम पर "ग्रुप" का नाम रख दिया जाए। सबको यह सुझाव पसन्द आया। इस ग्रुप के अन्य सदस्यों में अम्बादास, जयराम पटेल, हिम्मत शाह आदि हैं।

स्वामीनाथन ने देश-विदेश की यात्राएँ कीं। युवा कलाकारों को बढ़ावा देना और उनसे कला पर बातचीत करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। वे हमेशा कुछ नया सोचने और करने वालों

में से थे। संगीतकारों, फिल्मकारों और थियेटरवालों से भी उनकी दोस्ती थी। स्वामीनाथन जब चिड़िया, पेड़, पहाड़ वाले चित्र बना रहे थे, तब वे ब्रश के साथ-साथ अपनी पत्नी भवानी स्वामीनाथन की पुरानी साड़ियों के टुकड़ों से भी रंग लगाते और पोंछते थे, इससे चित्र में जहाँ-जहाँ वह चाहते थे लहरियाँ-सी बना लेते थे। जिससे चित्रों में गति का एहसास होता है। बाद के वर्षों में उन्होंने रंगों में बालू और कुछ चीज़ें मिलाकर भी काम किया।

जगदीश स्वामीनाथन का जन्म 21 जून 1928 को हुआ था और देहान्त हुआ 30 अप्रैल 1994 को। कुर्ता और दक्षिण भारतीय धोती उनका पहनावा थे। दाढ़ी और बड़ी-बड़ी चौकन्नी आँखों वाले स्वामीनाथन को लोग दूर से ही पहचान लेते थे। चिड़िया बनाने वाले और मज़ेदार तथा सोचने-विचारने की बातें करने वाले, स्वामीनाथन हम सबको बहुत-बहुत याद आते हैं।

पहाड़ अकेला, पक्षी अकेला और अकेला पेड़

उदयन वाजपेयी

जगदीश स्वामीनाथन देश के सबसे विचारवान चित्रकार रहे हैं। उन्होंने न सिर्फ खूबसूरत चित्र बनाए बल्कि चित्रकला की भारतीय परम्परा पर गहन विचार कर उससे जुड़ने की ईमानदार कोशिश भी की। उनके चित्र न सिर्फ हमें स्वयं आनन्दित करते हैं बल्कि वे हमारी चित्र-परम्परा की स्मृति को भी जगाते हैं। यह चित्र "पक्षी, पेड़ और पर्वत" भी उनके अनेक चित्रों की तरह भारतीय लघुचित्रों से प्रेरित है। लघुचित्रों में चित्रित दृश्य वास्तविक संसार से नहीं आते। वे या तो चित्रकार के कल्पना-लोक से आते हैं या कविता से। इसलिए इन लघुचित्रों में सपने का-सा अहसास होता है।

स्वामीनाथन का बचपन शिमला के सुन्दर पहाड़ों, झरनों और ज़मीन पर झुक आए बादलों के बीच गुज़रा था। वे सुन्दर पहाड़ों के बीच रहते रहे। धीरे-धीरे वे पहाड़ और वह परिवेश उनके अपने मन में बस गए। इस सबको मन में बसाए वे दिल्ली आ गए।

हम उनके इस चित्र पर विचार करें। इससे पहले हम यह जान लें कि हर चित्रकार एक तरह से अधूरा चित्र बनाता है। जब कोई कल्पनाशील दर्शक उसे देखता है तो वह उसे अपनी तरह से पूरा करता है। तुम भी इस चित्र को अपनी तरह से देखकर उसे पूरा करोगे।

मैंने उसे कैसे पूरा किया, तुमको बताता हूँ:

यहाँ पहाड़ ऐसा है जिस पर चढ़ा नहीं जा सकता है। यह सुन्दर पर कठिन पहाड़ अपने आप में मग्न है। और इसके अकेलेपन को दर्शाता है इसकी चोटी पर उगा अकेला पेड़। दरअसल इस चित्र के तीनों किरदार अकेले हैं : पहाड़ अकेला है, **पक्षी अकेला है और अकेला है पेड़।**

जब कभी आप किसी पहाड़, या समुद्र या तारों से भरे आकाश के सामने होते हैं तो आपको अपने भीतर गहरा अकेलापन अनुभव होता है। आपको महसूस होता है मानो आपके अकेलेपन में सृष्टि के सभी जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, नदी-झरने शामिल होते जा रहे हों। यह बड़ा ही सुन्दर अकेलापन है। यह अनुभव स्वामी के इन तीनों चित्रों में दिखाई दे रहा है। इनमें सबसे विचित्र पक्षी का चित्रण है। वो तेज़ी से लगभग पत्थर की तरह नीचे गिरता हुआ आधे रास्ते में सँभलकर ऊपर उड़ने लगा है। उसके पीछे-पीछे उसके नीचे आने का रास्ता छूट गया है। हम देख सकते हैं कि वह कैसे लहरा कर नीचे आया था और फिर कैसे लहराते हुए ऊपर जाने लगा है। इस चित्र में स्वामीनाथन ने पक्षी और उसकी उड़ान दोनों को चित्रित किया है। एक ठहरे हुए पहाड़ और शान्त खड़े हुए पेड़ के बगल में यह पक्षी नाचता हुआ-सा नीचे आता है। और वैसे ही नाचता हुआ-सा ऊपर चला जाता है। एक ही दृश्य में अपने-अपने अकेलेपन का ये तीनों किरदार अपने-अपने ढंग से उत्सव मना रहे हैं। पहाड़ भीतर ही भीतर कुछ गुन रहा है, पेड़ उसकी चोटी पर किसी योगी की तरह खड़ा है और पक्षी? वह अपने अकेलेपन में नाच रहा है।